

निःसंतान परिवार तथा पुनर्गठित/सौतेले परिवार

प्रस्ताव

परिवार समाज की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थाओं में से एक है। परंपरागत रूप से परिवार को पत्नी और उनके बच्चों से बने परिवार के रूप में देखा जाता था। लेकिन आधुनिक समाज में शिक्षा, रोजगार, नगरीकरण, औद्योगीकरण, विवाह-विच्छेद, पुनर्विवाह, बदलती जीवन-शैली तथा व्यक्तिगत निर्णयों के कारण परिवार के स्वरूप में परिवर्तन आया है। इसी परिवर्तन के परिणामस्वरूप निःसंतान परिवार तथा पुनर्गठित या सौतेले परिवार जैसे वैकल्पिक पारिवारिक स्वरूप दिखाई देते हैं।

1. निःसंतान परिवार

अर्थ

निःसंतान परिवार से आशय ऐसे परिवार से है जिसमें पति-पत्नी के साथ कोई संतान नहीं रहती। निःसंतानता दो प्रकार की हो सकती है—स्वैच्छिक और परिस्थितिजन्य।

कुछ दंपति अपनी व्यक्तिगत पसंद, कैरियर, आर्थिक स्थिति या जीवनशैली के कारण संतान न रखने का निर्णय लेते हैं। दूसरी ओर, कुछ दंपति संतान चाहते हुए भी विभिन्न व्यक्तिगत या सामाजिक परिस्थितियों के कारण संतान प्राप्त नहीं कर पाते।

निःसंतान परिवार की प्रमुख विशेषताएँ

1. पति-पत्नी का केंद्रीय संबंध

इस प्रकार के परिवार में पति-पत्नी का संबंध परिवार का प्रमुख आधार होता है।

2. बच्चों की अनुपस्थिति

परिवार में बच्चों के पालन-पोषण, शिक्षा और सामाजिकरण की नियमित जिम्मेदारी नहीं होती।

3. आर्थिक संसाधनों का अलग उपयोग

बच्चों से संबंधित खर्च न होने के कारण दंपति अपनी आय का उपयोग बचत, आवास, शिक्षा, यात्रा, कैरियर या अन्य आवश्यकताओं में कर सकते हैं।

4. व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक विकास

दोनों व्यक्ति अपने कैरियर और व्यक्तिगत रुचियों के विकास के लिए अधिक समय दे सकते हैं।

5. स्वतंत्र जीवनशैली

दंपति अपनी परिस्थितियों और पसंद के अनुसार पारिवारिक जीवन का संचालन कर सकते हैं।

निःसंतान परिवार के प्रकार

(क) स्वैच्छिक निःसंतान परिवार

जब दंपति अपनी इच्छा से संतान न रखने का निर्णय लेते हैं, तो इसे स्वैच्छिक निःसंतान परिवार कहा जाता है।

(ख) परिस्थितिजन्य निःसंतान परिवार

जब दंपति संतान चाहते हैं, लेकिन विभिन्न परिस्थितियों के कारण संतान नहीं हो पाती, तो उसे परिस्थितिजन्य निःसंतानता कहा जा सकता है।

निःसंतान परिवार की समस्याएँ

1. सामाजिक एवं पारिवारिक दबाव – भारतीय समाज में संतान को परिवार का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है, इसलिए दंपति को संतान के लिए सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ सकता है।
2. भावनात्मक तनाव – संतान की इच्छा पूरी न होने की स्थिति में भावनात्मक कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं।
3. रिश्तेदारों की अपेक्षाएँ – परिवार एवं रिश्तेदारों की टिप्पणियाँ या अपेक्षाएँ दंपति को प्रभावित कर सकती हैं।
4. भविष्य की सुरक्षा – वृद्धावस्था में सामाजिक एवं भावनात्मक सहयोग को लेकर चिंता हो सकती है।
5. पति-पत्नी के बीच मतभेद – संतान रखने या न रखने को लेकर विचारों में अंतर होने पर वैवाहिक तनाव उत्पन्न हो सकता है।

सकारात्मक पक्ष

निःसंतान परिवार को केवल समस्या के रूप में देखना उचित नहीं है। ऐसे परिवारों में दंपति अपने समय और संसाधनों का उपयोग कैरियर, व्यक्तिगत विकास, सामाजिक कार्य, आर्थिक योजना तथा अन्य जीवन लक्ष्यों के लिए कर सकते हैं।

2. पुनर्गठित परिवार

अर्थ

पुनर्गठित परिवार (Reconstituted/Blended Family) वह परिवार है जो किसी पूर्व विवाह के समाप्त होने, तलाक, अलगाव या जीवनसाथी की मृत्यु के बाद पुनर्विवाह या नए वैवाहिक संबंध के माध्यम से बनता है और जिसमें एक या दोनों जीवनसाथियों के पूर्व संबंधों से हुए बच्चे भी शामिल हो सकते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि एक महिला का पहले विवाह से एक बच्चा है और वह ऐसे पुरुष से पुनर्विवाह करती है जिसके भी पूर्व विवाह से बच्चे हैं, तो उनके साथ रहने पर एक पुनर्गठित परिवार बन सकता है।

3. सौतेला परिवार

सौतेला परिवार (Step Family) पुनर्गठित परिवार का एक स्वरूप है। इसमें किसी व्यक्ति का नया जीवनसाथी उसके बच्चे का जैविक माता या पिता नहीं होता, लेकिन वह बच्चे के दैनिक जीवन, देखभाल और पारिवारिक व्यवस्था में भूमिका निभा सकता है।

इस प्रकार के परिवार में जैविक माता-पिता, सौतेले माता-पिता तथा बच्चे के बीच संबंधों का समायोजन महत्वपूर्ण होता है।

पुनर्गठित/सौतेले परिवार की प्रमुख विशेषताएँ

1. पुनर्विवाह पर आधारित संरचना

यह परिवार सामान्यतः पुनर्विवाह या नए वैवाहिक संबंध के बाद बनता है।

2. पूर्व संबंधों की उपस्थिति

परिवार में पूर्व विवाह से जुड़े बच्चे और अन्य रिश्ते मौजूद हो सकते हैं।

3. नई पारिवारिक भूमिकाएँ

नए जीवनसाथी को परिवार में अपनी भूमिका निर्धारित करनी पड़ती है।

4. भावनात्मक समायोजन

बच्चों और सौतेले माता-पिता के बीच विश्वास एवं भावनात्मक संबंध विकसित करने में समय लग सकता है।

5. सह-अभिभावकता

कुछ मामलों में बच्चे का जैविक माता या पिता परिवार से अलग रहते हुए भी बच्चे के पालन-पोषण में शामिल रहता है।

6. संबंधों की जटिलता

जैविक माता-पिता, सौतेले माता-पिता, बच्चे और अन्य रिश्तेदारों के बीच संबंधों के कारण पारिवारिक व्यवस्था अपेक्षाकृत जटिल हो सकती है।

4. पुनर्गठित/सौतेले परिवार की प्रमुख समस्याएँ

1. भावनात्मक समायोजन की समस्या

बच्चों को नए परिवार और नए सदस्यों के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ने में समय लग सकता है।

2. अनुशासन संबंधी समस्या

सौतेले माता-पिता द्वारा बच्चे के अनुशासन में हस्तक्षेप को लेकर मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं।

3. निष्ठा का द्वंद्व

बच्चा अपने जैविक माता-पिता के प्रति अपनी भावनाओं और सौतेले माता-पिता के साथ नए संबंध के बीच असमंजस अनुभव कर सकता है।

4. भाई-बहनों के बीच समायोजन

पूर्व विवाहों से आए बच्चों को एक-दूसरे के साथ नए संबंध बनाने पड़ते हैं।

5. आर्थिक समस्याएँ

बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, पालन-पोषण और अन्य आवश्यकताओं को लेकर आर्थिक जिम्मेदारियों का निर्धारण चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

6. पूर्व जीवनसाथी से संबंध

यदि जैविक माता या पिता बच्चे के जीवन में सक्रिय है, तो नए परिवार और पुराने परिवार के बीच संतुलन बनाना आवश्यक हो जाता है।

7. सामाजिक स्वीकृति

कुछ परिस्थितियों में सौतेले परिवारों को सामाजिक पूर्वाग्रहों या रूढ़िवादी धारणाओं का सामना करना पड़ सकता है।

5. पुनर्गठित परिवार के सकारात्मक पक्ष

बच्चे को अतिरिक्त भावनात्मक एवं सामाजिक सहयोग मिल सकता है।

परिवार में नए संबंध और सहयोग विकसित हो सकते हैं।

पुनर्विवाह के बाद व्यक्ति को सामाजिक एवं भावनात्मक सुरक्षा मिल सकती है।

बच्चों की देखभाल में अतिरिक्त वयस्क की भूमिका हो सकती है।

परिवार के सदस्यों में सहयोग, समायोजन और जिम्मेदारी की भावना विकसित हो सकती है।

6. समाज कार्य में इन परिवारों का महत्व

समाज कार्यकर्ता निःसंतान, पुनर्गठित और सौतेले परिवारों के साथ कार्य करते समय परिवार की वास्तविक परिस्थितियों को समझते हैं। उनकी प्रमुख भूमिकाएँ हैं—

1. परिवार परामर्श प्रदान करना।

2. पति-पत्नी के बीच संवाद एवं सहयोग बढ़ाना।

3. बच्चों की भावनात्मक एवं सामाजिक आवश्यकताओं को समझना।

4. सौतेले माता-पिता और बच्चों के बीच स्वस्थ संबंध बनाने में सहायता करना।

5. परिवार को सामाजिक सुरक्षा एवं कल्याणकारी सेवाओं से जोड़ना।

6. बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं में सहायता करना।

7. पारिवारिक संघर्षों में मध्यस्थता करना।

8. परिवार के सदस्यों में समानता, सम्मान और सहयोग की भावना विकसित करना।

निःसंतान एवं पुनर्गठित परिवार में अंतर

आधार निःसंतान परिवार पुनर्गठित/सौतेला परिवार

संरचना पति-पत्नी, संतान नहीं पुनर्विवाह के बाद बना परिवार

बच्चों की स्थिति बच्चे नहीं होते/साथ नहीं रहते एक या अधिक बच्चे हो सकते हैं

मुख्य संबंध पति-पत्नी का संबंध पति-पत्नी, बच्चे एवं पूर्व संबंध

प्रमुख चुनौती सामाजिक दबाव एवं भविष्य की चिंता भावनात्मक एवं पारिवारिक समायोजन

प्रमुख आवश्यकता सामाजिक एवं भावनात्मक सहयोग संबंध निर्माण, परामर्श एवं पारिवारिक समायोजन

निष्कर्ष

निःसंतान परिवार तथा पुनर्गठित/सौतेले परिवार आधुनिक समाज में परिवार की बदलती संरचना को दर्शाते हैं।

निःसंतान परिवार को केवल संतान के अभाव के आधार पर अधूरा नहीं माना जाना चाहिए। इसी प्रकार पुनर्गठित या सौतेले परिवार में संबंधों की जटिलता के बावजूद विश्वास, संवाद, सम्मान और सहयोग के माध्यम से स्वस्थ पारिवारिक वातावरण विकसित किया जा सकता है।

समाज कार्य के दृष्टिकोण से इन परिवारों को पारंपरिक परिवार की कसौटी पर परखने के बजाय उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं, अधिकारों, भावनात्मक स्थिति और सामाजिक परिस्थितियों को समझना आवश्यक है। उचित परामर्श, सामाजिक सुरक्षा, सामुदायिक सहयोग और परिवार-केंद्रित सेवाओं के माध्यम से इन परिवारों के सदस्यों के जीवन को अधिक सुरक्षित एवं संतुलित बनाया जा सकता है।